Question — Career and achivement of Rajendra Burman.

कम्बुज के इतिहास में राजेन्द्र वर्मन को एक शक्तिशाली शासक के रूप स्थान प्राप्त है। इसके शासनकाल में कम्बुज की चतुर्दिक उन्नति ~~हुई~~ हुई। राजेन्द्र वर्मन के इतिहास को जानने में तपन-संवोत (944 ई०), प्रहसत (869 ई०) का अभिलेख, प्रसत-प्राक् (869) का अभिलेख मेबोन अभिलेख (874), नोम-सण्डक और प्री-रूप अभिलेख से ~~भी~~ सहायता मिलती है।

राजेन्द्र वर्मन के संबंध में विद्वानों में मतभेद ~~नहीं~~ है। कुछ अभिलेखों में राजेन्द्र वर्मन को हर्षवर्मन का भाई माना गया है। जिससे प्रतीत होता है कि जयवर्मन ~~II~~ ही राजेन्द्र वर्मन का पिता था। परन्तु यदि राजेन्द्र वर्मन और हर्षवर्मन दोनों भाई थे तो बड़ा भाई के होते हुए भी हर्षवर्मन गद्दी पर क्यों बैठा। प्री-रूप अभिलेख से ज्ञात होता है कि यशोवर्मन की दो बहनें —

जय देवी तथा महेन्द्र देवी, थी। महेन्द्रदेवी की शादी महेन्द्र वर्मन से हुई थी और इसका पुत्र राजेन्द्र वर्मन था तथा जयदेवी की शादी जय वर्मन से हुई थी इसके पुत्र का नाम हर्षवर्मन था। साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि ~~क्रम~~ क्रमिक उत्तराधिकार के अभाव में समय समय पर राज्यप्राप्ति के लिये युद्ध होते रहे हैं। संभवतः इसीसे हर्षवर्मन के बाद राजेन्द्र वर्मन कम्बुज की गद्दी पर बैठा। प्री-रूप अभिलेख के अनुसार राजेन्द्र वर्मन का राज्याभिषेक 944 ई० हुआ था। इसका प्रथम अभिलेख प्री-रूप (944ई) ही है।

राजेन्द्र वर्मन ~~को~~ संघर्षपूर्ण शासनकाल का उल्लेख भी उसके अभिलेखों में हुआ है। इन अभिलेखों से ज्ञात होता है कि राजेन्द्र वर्मन को न केवल राजगद्दी के लिये युद्ध करना पड़ा बल्कि अपने शासन काल में उसे प्रायः संघर्ष करना पड़ा।

राजेन्द्र वर्मन ने अपने शासन काल के

प्रांगण में ही यशोवर्मन द्वारा स्थापित नगरी यशोधर पुर को कम्बुज की राजधानी बनाया जो कि जयवर्मन सप्तम द्वारा कम्बुज की राजधानी कोहकेर में स्थापित कर लेने के बाद लगभग उजड़ सा गया था। स्टोक-क्राक-थोम अभिलेख से ज्ञात होता है कि लक्ष्मीदेव अपने साथ देवराज की एक मूर्ति भी लाया था जिसे यशोवर्मन द्वारा निर्मित तालाब के मध्य एक मन्दिर बनाकर स्थापित की गई। राजेन्द्र वर्मन के शासन के फलस्वरूप ही यशोधर पुर की प्रतिष्ठा अंकोर थोम के रूप में हो सकी।

वट-चुमनिक तथा प्री-रूप अभिलेख से ज्ञात होता है कि राजेन्द्र वर्मन को चम्पा के साथ संघर्ष करना पड़ा था। इस युद्ध का वर्णन इसके पुत्र जयवर्धन के बनते-थाई अभिलेख में भी है। वट-चुमनिक अभिलेख से ज्ञात होता है कि राजेन्द्रवर्मन ने चम्पा पर विजय प्राप्त करके उसके अनेक नगरों को अपनी आज्ञा से विध्वस्त

करवा रखी थी। इसी लेख से यह भी ज्ञात होता है कि उसने अन्य विदेशी शक्तियों को भी हराया था। राजेन्द्र वर्मन द्वारा चम्पा विजय का उल्लेख भिन्न-भिन्न लेखों में मिला है, इसकी पुष्टि चम्पा से प्राप्त अभिलेखों से भी होती है। चम्पा के एक लेख में वर्णित है कि कम्बुज के निवासी (965) पो-नगर की स्वर्ण प्रतिमा को उठा लाये जिसके स्थान पर तत्कालीन चम्पा के शासक ने दूसरी पद्मयोनि प्रतिमा की स्थापना करवाई। पो-नगर मन्दिर में स्थापित स्वर्ण प्रतिमा संभवतः राजेन्द्र-वर्मन के ही सैनिक 10 वीं सदी के मध्य में उठा ले गये थे। चम्पा के अतिरिक्त अन्य राज्यों पर भी राजेन्द्र वर्मन के आक्रमण का भी संकेत अभिलेखों में मिला है परन्तु इन राज्यों के नाम उल्लेखित नहीं है।

प्रह-वत अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि राजेन्द्र वर्मन ब्राह्मण मतावलंबी होते हुए भी धर्म सहिष्णु

शासक था। इसने तथागत और माहेश्वर की मूर्ति स्थापित करवाई थी। इसी अभिलेख से यह भी ज्ञात होता है कि राजेन्द्र वर्मन ने शक संवत 874 में पार्वती, विष्णु, ब्रह्मा और राजेन्द्रेश्वर नामक शिवलिंग की स्थापना की थी। प्री-रूप अभिलेख में राजेन्द्रेश्वर शिवलिंग की स्थापना का उल्लेख है, इसी स्थान के पास दो शिव के तथा उमा और विष्णु के भी मंदिर बने। इसके बौद्ध अभिलेखों से प्रतीत होता है कि उसने बौद्ध सिद्धान्तों का भी अध्ययन किया था। राजेन्द्र वर्मन के अभिलेखों से जहां उसकी धर्म सहिष्णुता का पता चलता है वहीं उसकी साहित्य रुचि का भी ज्ञान होता है। उसके द्वारा उत्कीर्ण कराये गये सभी अभिलेख उच्चकोटि के काव्य शैली के बताते हैं।

उक्त विवरणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि राजेन्द्र वर्मन

एक शक्तिशाली शासक था. अपने प्रदेशों में होने वाले विद्रोहों का दमन करने के लिये उसे प्रायः संघर्ष करना पड़ा। इसके शासन काल में कम्बुज का चतुर्मुखी विकास हुआ। 968 ई० में मृत्योपरान्त राजेन्द्र वर्मन को शिवलोक की उपाधि से विभूषित किया गया।